अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महानदी को पार कर कटक पहुंचे महातपस्वी महाश्रमण

–भव्य स्वागत जुलूस के साथ आचार्यश्री पहुंचे ओएसएपी हाइस्कूल

–आत्मा पर ध्यान देकर जीवन का कल्याण करने की दी पावन प्रेरणा

11.01.2018 कटक (ओड़िशा): जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना व अहिंसा यात्रा संग ओड़िशा राज्य की प्रमुख नदी महानदी को अपने चरणरज से पावन करते हुए कटक में पधारे तो मानों यह उत्कल धरा की महानदी महातपस्वी महाश्रमण के चरणरज को पाकर गौरवान्वित हो उठी।

21 दिसम्बर 2017 को अहिंसा यात्रा अपने प्रणेता महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के संग भारत के बारहवें राज्य के रूप में ओड़िशा में मंगल प्रवेश किया। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अब तक लगभग 21 दिन की यात्रा में ओड़िशा के मयूरभंज, क्योंझर, जाजपुर जिले में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेशों की ज्योति जलाकर वर्तमान में ओड़िशा के एक सुप्रसिद्ध जिले कटक में यात्रायित हैं।

गुरुवार को कटक के टांगी स्थित ड्रीम्स ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के गेस्ट हाउस से महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रस्थान किया। आज आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में कटक के सैंकड़ों–सैंकड़ों श्रद्धालु पहुंच चुके थे। आचार्यश्री अपनी धवल सेना का कुशल नेतृत्व करते हुए जैसे–जैसे कटक के नजदीक पहुंच रहे थे श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही थी। कुछ किलोमीटर की यात्रा के उपरान्त आचार्यश्री राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–16 से होते हुए ओड़िशा राज्य की प्रमुख नदी महानदी पर बने पुल पधारे तो मानों यह महानदी महातपस्वी के चरणरज को पाकर धन्य हो उठी।

महानदी को अपने चरणरज से पावन कर आचार्यश्री कटक महानगर के समीप पधारे तो सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। अपने अराध्य के स्वागत में उपस्थित जन समूह एक भव्य जुलूस का रूप में बदला ओर अपने आराध्य को लेकर ओएसएपी हाइस्कूल पहुंचा। जहां हाइस्कूल और अपर प्राइमरी स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाओं ने शंखनाद और उललूक ध्वनि के द्वारा आचार्यश्री का अपने विद्यालय प्रांगण में अभिनन्दन किया।

उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने अपनी अमृतवाणी का रसपान कराते हुए कहा कि दुनिया में दो तत्त्व होते हैं–जीव और अजीव अथवा जड़ और चेतन। आदमी का जीवन भी इन दोनों तत्त्वों के संयोग से बना है। आदमी का शरीर जड़ है तो उसके भीतर विराजमान आत्मा चैतन्य है। आत्मा स्थाई है, शाश्वत है तो शरीर अस्थाई और अशाश्वत है। आदमी शरीर को संभालने के लिए कितना कुछ करता है, जबकि शरीर तो अस्थाई है जो कभी छूट भी जाएगा, किन्तु आत्मा शाश्वत है जो आगे भी रहेगी। इसलिए आदमी को अस्थाई के साथ ही स्थाई तत्त्व अर्थात आत्मा पर भी ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए। आदमी का धन, दौलत, वैभव, एश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा एक दिन छूट जाएगा। आदमी के मृत्यु के बाद सबकुछ यहीं छूट जाएगा। धन, दौलत, शरीर यह सबकुछ आदमी को संयोग से प्राप्त हुआ है और जिसका संयोग होता है, उसका कभी न कभी वियोग भी होता है। इसलिए आदमी को अपनी आत्मा का ध्यान देना चाहिए और कुछ समय धर्म में लगाने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी आत्मा और शरीर को भिन्न मानकर अपनी आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा के कल्याण के लिए आदमी को ध्यान, साधना, स्वाध्याय, जप और किसी की पवित्र सेवा के द्वारा धर्म का अर्जन करने का प्रयास करना चाहिए, जिसके माध्यम से आदमी की आत्मा का कल्याण हो सके। आदमी अकेलेपन का चिंतन करे तो वह मोह भाव को कम कर सकता है और आध्यात्म की साधना की ओर गति कर सकता है।

ओएसएपी हाइस्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती स्वर्णलता देई व नोडल यूपी स्कूल की शिक्षिका श्रीमती सविता महंती ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।